ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

133

सबलोग

नवम्बर 2024 • ₹ 40

भाषा का स्वराज

- उफ! यह देश किधर जा रहा है
- नैटो और इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ
- दलित रंगमंच की वैचारिकी

साहित्यिक पत्रकारिता के तीन दशक

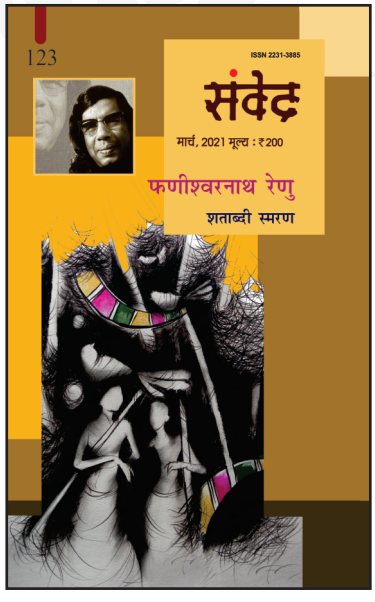

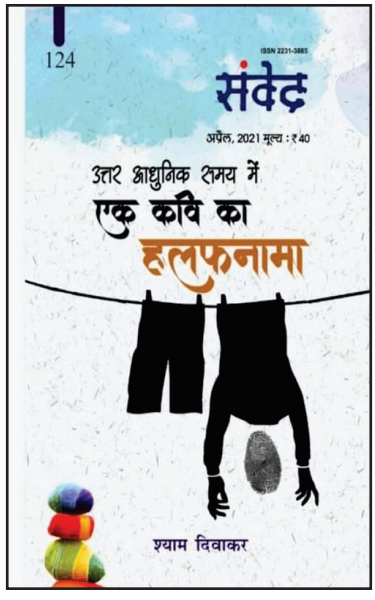

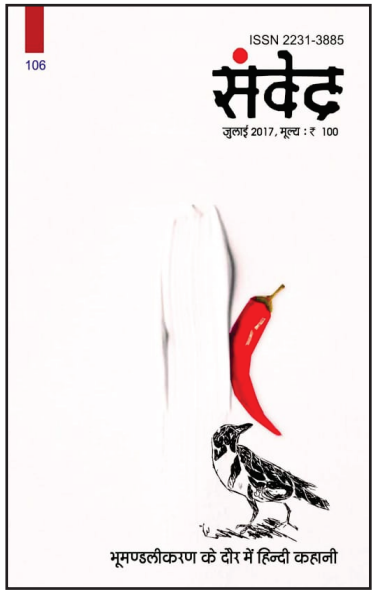

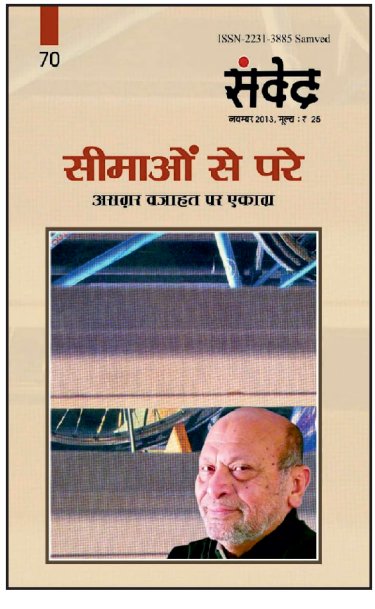

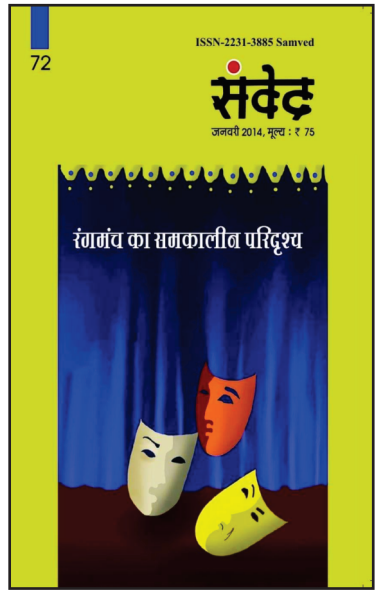

सम्पादक
किशन कालजयी

एक अंक : चालीस रुपये
विशेषांक : दो सौ रुपये
वार्षिक सदस्यता : सात सौ रुपये
एक हजार रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)

B-3/44, Sector-16, Rohini, Delhi-110089
+91 8340436365
linkedin.com/company/samvedindia
samved.sablog.in
facebook.com/samvedmasik
samvedmonthly@gmail.com
twitter.com/samvedindiaInstagram
instagram.com/samvedindia

सबलोग-133

वर्ष 15, अंक 11, नवम्बर 2024

ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL
www.sablog.in

सम्पादक
किशन कालजयी

संयुक्त सम्पादक
प्रकाश देवकुलिश
राजन अग्रवाल

उप सम्पादक
गुलशन चौधरी

ब्यूरो
उत्तर प्रदेश : शिवाशंकर पाण्डेय
मध्य प्रदेश : जावेद अनीस
बिहार : कुमार कृष्णन
झारखण्ड : विवेक आर्यन

समीक्षा समिति (Peer Review Committee)
आनन्द कुमार
सुबोध नारायण मालाकार
मणीन्द्र नाथ ठाकुर
मंजु रानी सिंह
सफदर इमाम कादरी
राजेन्द्र रवि
मधुरेश
आनन्द प्रधान
महादेव टोप्पो
विजय कुमार
आशा
सन्तोष कुमार शुक्ल
अखलाक 'आहन'

प्रबन्ध निदेशक
अभय कुमार झा

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, तीसरा तल, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
+ 918340436365
sablogmonthly@gmail.com

सदस्यता शुल्क
एक अंक : 40 रुपये–वार्षिक : 450 रुपये
द्विवार्षिक : 900 रुपये–आजीवन : 5000 रुपये

सबलोग
खाता संख्या-49480200000045
बैंक ऑफ बड़ौदा,
शाखा-बादली, दिल्ली
IFSC-BARB0TRDBAD
(Fifth Character is Zero)

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिण्टर्स, 556 जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका अव्यावसायिक और सभी पद अवैतनिक।
पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

भाषा का स्वराज

भाषाई जनतन्त्र का आग्रह : **मणीन्द्र नाथ ठाकुर** 4
हिन्दी-हिन्दुस्तानी और भाषा का लोकतन्त्र : **संजय कुमार** 7
ज्ञान की भाषा के रूप में हिन्दी : **राजकुमार** 10
अनुवाद की अहमियत : **अरविन्द शर्मा** 13
हिन्दी की स्थिति और अवधारणा : **रमण सिन्हा** 14
भाषा की राजनीति और भाषा-नीति : **अमरेन्द्र कुमार शर्मा** 16
भारतीय भाषाओं का जनतन्त्र : **प्रेमपाल शर्मा** 19
हिन्दी और जनपदीय भाषाएँ : **राजीव रंजन गिरि** 21
भाषाई प्रभुत्व का दैनिक जीवन : **राहुल यादुका** 24
भाषा, स्मृति और संस्कृति : **शाम्भवी तिवारी** 26

सृजनलोक

छः कविताएँ : **देवेश पथ सारिया,** टिप्पणी : **प्रेम रंजन अनिमेष,** रेखांकन : **शेखर** 28

राज्य

बिहार / स्कूली शिक्षा का परिदृश्य : **गजेन्द्र कान्त शर्मा** 30
उत्तर प्रदेश / किस करवट बैठेगा ऊँट : **शिवा शंकर पाण्डेय** 32
झारखण्ड/ चुनावी सरगर्मी के बीच गफलत : **विवेक आर्यन** 34

स्तम्भ

चतुर्दिक / उफ! यह देश किधर जा रहा है : **रविभूषण** 36
देशान्तर / नैटो और इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ : **धीरंजन मालवे** 39
तीसरी घण्टी / दलित रंगमंच की वैचारिकी : **राजेश कुमार** 41
यत्र-तत्र / परिधि पर कविता : **जय प्रकाश** 44
परती परिकथा / विकास की संस्कृति का द्वन्द्व : **हितेन्द्र पटेल** 47
कविताघर / गल्प नहीं, कविता है यह : **प्रियदर्शन** 49

विविध

स्मरण / रतन टाटा की विदाई और सामाजिक प्रतिक्रियाएँ : **अजय तिवारी** 51
शहरनामा / जीवन रक्षक हैं दिल्ली की नर्सरियाँ : **राधेश्याम मंगोलपुरी** 52
मुद्दा / आरक्षण का वस्तुगत विश्लेषण : **शैलेन्द्र चौहान** 55
शोध लेख / मणिपुर का भाषिक परिदृश्य : **जमुना सुखाम** 58
सिनेमा / सत्यजीत राय के वाजिद अली शाह : **रक्षा गीता** 61
संस्कृति / आदिवासियत और और भाषा की समस्या : **ग्लोरिया रेशमा कुजूर** 64
लिये लुकाठी हाथ / साहब बनाम साहिबी : **रेखा साह आरबी** 66
रंगसाज / अभी-अभी गये व्यक्ति की तरह कला में उपस्थिति : **देव प्रकाश चौधरी** 67

आवरण : **शशिकान्त सिंह**

अगला अंक : गरीबी उन्मूलन : नीति और नीयत

भाषाई जनतन्त्र का आग्रह

मणीन्द्र नाथ ठाकुर

आज जब हम उत्साह के साथ कहते हैं कि भारत को युवा जनसंख्या का देश होने का गर्व है तो हम भूल जाते हैं कि उनमें से ज्यादातर युवा कुण्ठाग्रस्त हैं, अपमानित और बेरोजगार हैं। अँग्रेजी नहीं जानना इन सबका बड़ा कारण है। अपनी भाषा में सोचने-समझने को त्याग देने के कारण उनकी रचनात्मक और नवीन ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता क्षीण हो जाती है। उनकी रचनात्मकता का कोई राष्ट्रीय उपयोग नहीं हो पाता है।

भारतीय भाषाओं को लेकर कई मसले हमेशा जीवन्त रहते हैं। इसके दो महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। एक तो अँग्रेजी का 'अलौकिक साम्राज्य' और दूसरा भारतीय भाषाओं के बीच संवाद। औपनिवेशिक काल में जिस 'ब्राऊन साहिब' (वारिन्द्र तरजी विट्टाची की पुस्तक का यह शीर्षक है जिसमें इस नाम से उन्हें सम्बोधित किया गया है जो स्वतन्त्रता के बाद भी भारत में अँग्रेजों जैसा जीवन-यापन करते हैं) का वर्चस्व भारत में काबिज हुआ उसे अब तक इतना स्वाभाविक मान लिया गया है कि आम लोगों के लिए प्रक्रिया को समझ पाना भी मुश्किल है। अँग्रेजी का यह साम्राज्य स्वतन्त्रता के बाद भी लगातार मजबूत होता चला गया। भाषा को ठीक से समझने के लिए सामाजिक और आर्थिक वर्चस्व से उसके सम्बन्ध को समझना जरूरी है। स्कूली शिक्षा के मामले में भारत में लगभग 90% बच्चे गैर-हिन्दी भाषा में अपनी शिक्षा पाते हैं। लेकिन उनमें से केवल कुछ ही प्रतिशत बच्चे ऊँची नौकरियों में जा पाते हैं। भारतीय समाज में अँग्रेजी शिक्षा सफलता की कुंजी मान ली गयी है। ऐसे में कुछ दलित चिन्तक यदि अँग्रेजी को माता कहते हैं तो गलत क्या है? उनके लिए जाति-प्रथा के द्वारा हरण कर ली गयी उनकी प्रतिष्ठा को वापस पाने की सीढ़ी केवल अँग्रेजी शिक्षा हो सकती है। लेकिन यह उनकी चाहत-भर है। वास्तविकता उससे अलग है। दलित बच्चों के लिए अँग्रेजी शिक्षा की उपलब्धता आसान नहीं है।

संख्या बल के बावजूद हिन्दी या किसी अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों की तुलना में अँग्रेजी के लेखकों की आमदनी कई गुना ज्यादा होती है। कई नामचीन प्रोफेसरों का मानना है कि किसी संगोष्ठी में इस बात का महत्त्व ज्यादा है कि आप कैसी अँग्रेजी बोल रहे हैं, आम तौर पर लोग ध्यान नहीं देते कि आपकी बातों में तथ्य और तर्क कितना है। इन संगोष्ठियों में अँग्रेजी को लेकर जो दंश उन्हें झेलना पड़ता है उसे कई बार लिखा जा चुका है। हाल ही में अमेरिका में कार्यरत एक प्रसिद्ध महिला भारतीय चिन्तक को लेकर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एक विवाद हुआ था। इस विवाद में औपनिवेशिक समाज के महान बुद्धिजीवियों में अँग्रेजी को लेकर जो कुण्ठा है वह सामने आ गयी। क्या हाशिये के लोग बोल सकते हैं? इस सवाल पर लिखे एक लेख ने इन्हें बहुत प्रसिद्धि दी थी। लेकिन इस सभा में एक दलित लड़के द्वारा किसी विदेशी विद्वान के नाम का उच्चारण शुद्ध नहीं कर पाने पर नाराज हो गईं और उस छात्र को अपमानित करने लगीं। उस छात्र ने जब उनसे अनुरोध किया कि उच्चारण की शुद्धता से आगे जाकर मुद्दे की बात की जाये तो और बिफर गईं। दरअसल इस वाकये से उनके महान बौद्धिक होने के

लेखक समाजशास्त्री और जे.एन.यू. में प्राध्यापक हैं।
+919968406430
manindrat@gmail.com